JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"मैला आँचल" उपन्यास का संक्षिप्त विवेचन"

डॉ. गीता संतोष यादव

सहायक प्राध्यापिका

हिन्दी विभाग

एस.एम्.आर.के महिला महाविद्यालय

नाशिक-४२२००५

मैला आँचल हिंदी के आंचलिक उपन्यासों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है | फणीश्वरनाथ रेणू द्वारा १९५४ में इसकी रचना करना हिंदी उपन्यास के इतिहास में बडी ही क्रन्तिकारी घटना थी | जितनी १९३६ में प्रेमचंद द्वारा गोदान का लेखन | यद्यपि देहाती दुनिया जैसे कुछ उपन्यासों में आँचलिकता की सुगंध पहले भी महसूस की गई थी किन्तु, मैला अंचल के प्रकाशन के साथ ही आंचलिक उपन्यास की परम्परा घोषित रूप से चल पड़ी | स्वयं रेणु ने उपन्यास के प्रकथन में इसे आँचलिक उपन्यास के रूप में पेश किया है | वे लिखते हैं – "यह है मैला आँचल, एक आंचलिक उपन्यास, कथानक है पूर्णिया,मैंने इसके एक हिस्से को एक ही गाँव को--- पिछड़े गाँवों का प्रतीक मानकर – इस उपन्यास कथा का क्षेत्र बनाया है |"१

आँचालिक उपन्यास, उपन्यास लेखन की एक विशिष्ट शैली है| जिसमें लेखक किसी ख़ास भौगोलिक क्षेत्र का चयन करता है और अपनी विचारधारा का रंग चढाये बिना उसके सम्पूर्ण जीवन को यथारूप में प्रस्तुत करता है | जैसे उपन्यास अपनी स्थानीयता का अतिक्रमण नहीं करना चाहते बल्कि वे अपने विशिष्ट भूगोल या स्थानिकता में ही रखना चाहते हैं | मैला आँचल न सिर्फ घोषित तौर पर इस परंपरा का प्रस्थान बिंदु है बल्कि,आजतक के आंचलिक उपन्यासों के समक्ष एक सृजनात्मक चुनौती बनकर भी खड़ा है |

आँचलिक उपन्यास की मूलभूत विशेषता होती है कि, उसमें कोई व्यक्ति नहीं होता बल्कि कथाक्षेत्र या अंचल ही नायकत्व धारण करता है | मैला आँचल में यही हुआ है | इसमें २५६ मानवीय चरित्र हैं किन्तु, उनमें से एक भी ऐसा नहीं है, जिसे नायक माना जा सके | सभी चरित्र परस्पर मिलकर अंचल के ही जटिल

संश्लिष्ट चरित्र को उभारते हैं | कालीचरण और डॉ. प्रशांत बबनदास जैसे चरित्र कुछ प्रभावशाली प्रतीत होते हैं| किन्तु सम्पूर्ण आँचल के तुलना में वे कमजोर ही प्रतीत होते हैं |

आंचलिक उपन्यास का लेखक, अंचल के समग्र यथार्थ को उभारता है, यथार्थ का चयनात्मक प्रक्षेपण नहीं करता | उसमें सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक, राजनितिक, सभी पक्ष आते हैं और वे भी सुख-दुःख के उसी अनुपात में आते हैं ,जैसा वास्तविक जीवन में होता है | रेणु ने मेरीगंज की दुनिया के हर चरित्र को बखूबी चित्रित किया है | सामाजिक पक्ष के अंतर्गत उन्होंने जातिवाद, अशिक्षा, अन्धविश्वास और धार्मिक भ्रष्टाचार जैसे मुद्दे उठाए हैं| आर्थिक पक्ष में किसानों की गरीबी व जमींदारों का शोषण दिखाया है, तो राजनितिक पक्ष में उस समय के सभी दलों–कांग्रेस, सोशलिस्ट पार्टी व जनसंघ आदि के आतंरिक स्वरुप को सुधारकर रख दिया है |

खास बात यह है कि रेणु अपनी समाजवादी विचारधारा के मोह से बचे हैं | यदि वे समाजवादी मूल्यों को आधार बनाते हैं तो पूरा खतरा था कि, कुछ ज्यादा दिखाते और कुछ कम; आर्थिक पक्ष ज्यादा होता और सामाजिक पक्ष कम, सोशलिस्ट पार्टी की प्रशंसा ज्यादा होती और बाकी दलों की बुराई | रेणु ने अत्याधिक तटस्थता बनाये रखते हुए यथार्थ के दुखात्मक व सुखात्मक दोनों पक्षों का इमानदारी के साथ चित्रण किया है | वे खुद भूमिका में अपनी व्यवस्था की घोषणा इस प्रकार करते हैं – 'इसमें फूल भी हैं शूल भी, धूल भी है, गुलाब भी, कीचड़ भी है, चन्दन भी, सुन्दरता भी है, कुरूपता भी – मैं किसी से दामन बचाकर निकल नहीं पाया | कथा की सारी अच्छाइयों और बुराइयों के साथ साहित्य की दहलीज पर आ पड़ा हुआ हूँ,| पता नहीं अच्छा किया या बुरा|'२

सफल आंचलिक उपन्यासों में भौगोलिक वर्णों का काफी महत्त्व होता है | लेखक अंचल के भूगोल का वर्णन इतनी सूक्ष्मता के साथ करना चाहा है कि, पाठक की आँखों में अंचल का नक्शा खिंच जाये | रेणु इस मायने में अत्यंत सफल रहे हैं | उन्होंने मेरीगंज पहुँचने तक का रास्ता शुरू में ही विस्तार के साथ बताया है-

'मेरीगंज रौहतक स्टेशन से सात कोस पूरब कोसी को पार करके जाना होता है, बंध्या धरती का विशाल अंचल, कोसभर मैदान पार करने के बाद पूरब की और कालाजंगल दिखाई पड़ता है; वही है मेरीगंज कोठी |'

मेरीगंज तक पहुँचने के बाद लेखक गाँव के आतंरिक भूगोल का भी पर्याप्त परिचय देता है ताकि पाठक को उसकी पहचान मुकम्मल हो जाय | रेणु लिखते हैं –

'मेरीगंज एक बड़ा गाँव है |गाँव के पूरब एक धारा है जिसे कमला नदी कहते हैं | बरसात में कमला भर जाती है, बाकी मौसम में बड़े-बड़े गढ्ढों में पानी जमा रहता है |रोहतक स्टेशन से हलवाई और परचून की दुकानें आती है |,

मैला आँचल की सबसे बड़ी विशेषता मेरीगंज के विशिष्ट सांस्कृतिक वर्णों तथा आंचलिक शब्दावली के प्रयोग में निहित है | रेणु ने पात्रों से देशज और तद्भव शब्दों से निर्मित वही भाषा कहलाती है जो उस आँचल में सचमुच सुनायी पड़ती है | इसलिए इसमें कनिया, घमाघम , हरमोनिया, भैंस, चरमन, मिहीन , टिकस , हलुमान, आचारज

जी, जेहल, इत्यादी शब्द आते हैं इसी प्रकार हर दूसरे पृष्ठ पर कोई न कोई सांस्कृतिक प्रसंग उपस्थित है| कभी भौजिया के गीत, कभी विदापत का नृत्य, कभी सुरंगा की कहानी तो कभी जाट जटिन का खेल | ऐसा ही एक प्रसंग दृष्टव्य है |

१) अरे राम राम रे देखा रे इसर रे महादेव,
बामे ठाढी दुर्गा दाहिनी बोले काग |३

२) आज परेम रख लय लीह हो,
आहे पंथ झटकारी | ४

३) कंचाही बाँस के पिंजड़ा ,
जामें दियरो न बाती हो,
अरे हंसा उडल आकाश,
कोई संगो न साथी हो !५

स्पष्ट है की मैला आँचल आंचलिक उपन्यासों की सभी कसौटियों पर खरा उतरा है | दरअसल सच तो यह कि हिंदी में आंचलिक उपन्यासों के लिए कसौटियाँ खुद मैला आँचल ने ही गढ़ी है | इसके बाद कई लेखकों ने आंचलिक उपन्यास लिखे पर कोई भी मैला आँचल की टक्कर में खड़ा नहीं हो सका| यहाँ तक कि स्वयं फणीश्वरनाथ रेणू द्वारा १९५७ में रचित उपन्यास **'परती परिकथा'** भी इसके सामने फीका ही नजर आया | इस दृष्टी से कहा जा सकता है कि हिंदी की आंचलिक उपन्यास परंपरा में रेणु का स्थान वही है जो पश्चमी साहित्य में वहां के सबसे सफल आंचलिक उपन्यासकारों जैसे **मरिया एजवर्ड, टॉमस हार्डी तथा फाकनर** इत्यादि का है |

मैला आँचल सिर्फ आंचलिक उपन्यास नहीं है वह रष्ट्रीय जीवन का प्रतिनिधि उपन्यास भी है | – 'आंचलिक उपन्यास' तथा 'राष्ट्रिय जीवन का प्रतिनिधि उपन्यास' – ये दोनों संज्ञाए प्रथम दृष्टी में परस्पर विपरीत नजर आती हैं क्योंकि, जहाँ आंचलिक उपन्यास अपनी भौगोलिक विशिष्टता में संपन्न होना चाहता है, वहीं राष्ट्रीय जीवन का प्रतिनिधि उपन्यास अपनी भौगोलिक विशिष्टता या स्थानीयता का अतिक्रमण करना चाहता है| किन्तु सच यह है दोनों संज्ञाए विरोधी नहीं है जितनी प्रतीत होती है | यदि उपन्यासकार के पास सुलझी हुई रचना दृष्टी हो, रचनात्मक निपुणता हो तो वह आंचलिक उपन्यास के भीतर से भी राष्ट्रिय जीवन के प्रतिनिधित्व की संभावना बना सकता है |

मैला आँचल की राष्ट्रीयता गोदान की राष्ट्रीयता से भिन्न प्रकार की है | प्रेमचंद गोदान को लिखते समय इस प्रकार विशिष्ट सूचनाओं से सतर्कता से बचे है जो उपन्यास को निश्चित भूगोल में बांध सकती थी | उन्होंने गोदान में स्पष्ट रूप से लिखा है – "सेमरी और बेलारी गाँव गोदान राष्ट्रिय जीवन का प्रतिनिधि इसलिए है क्योंकि यह अपनी

स्थानीयता का अतिक्रमण करता है | इसके विपरीत, मैला आँचल का लेखक स्थानीयता और राष्ट्रीयता को परस्पर विरोधी मानने को तैयार नहीं है | वह स्थानीयता के भीतर राष्ट्रीयता की झलक दिखाना चाहता है | वह दिखता है कि एक विशेष गाँव में वे सारी समस्याएँ अपने तरीके से मौजूद होती है जो देश के हर हिस्से में है | एक वाक्य में कहें तो जहाँ गोदान राष्ट्रिय जीवन का चित्रण मैक्रोस्कोपिक 'स्तर पर करता है, वहीँ मैला आँचल माइक्रोस्कोपिक स्तर पर |

ऐसा नहीं है कि राष्ट्रीय जीवन का प्रतिनिधित्व मैला आँचल में संयोगवश दिखाई पड़ता है | वस्तुत इसके पीछे रेणु की एक स्पष्ट योजना रही है, उन्होंने भूमिका में ही स्पष्ट कह दिया है कि यह उपन्यास सिर्फ **मेरीगंज** का ही नहीं, मेरीगंज के माध्यम से देश के हर गाँव का है | भाषा चाहे अलग हो, भौगोलिक विशेषताएँ भले ही भिन्न हो, सांस्कृतिक परम्पराओं में भी चाहे अंतर नजर आये हो ं किन्तु जीवन की प्रवृत्ति एक ही है, समस्याएँ व कठोर वास्तविकता एक सी है | भूमिका में उसका स्पष्ट कथन है –

"कथानक है पूर्णिया|पूर्णिया बिहार राज्य क एक जिला है,इसके एक ओर नेपाल,दूसरी ओर पाकिस्तान और पश्चिम बंगाल है|विभिन्न सीमा रेखाओं से इसकी बनावट मुकम्मल हो जाती है,जब हम दक्खिन में संथाल परगना और पश्चिम में मिथिला की सीमारेखाएं खींच देते हैं, मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गाँव को- पिछड़े गावों का प्रतीक मानकर एस उपन्यास- कथा का क्षेत्र बनाया है |"

मेरीगंज पिछड़े गावों का प्रतिक है – यह कहकर रेणु ने यही स्पष्ट किया है कि यह उपन्यास प्रतीकात्मक रूप से देश के हर पिछड़े गाँव का दूसरे शब्दों में पूरे देश का प्रतिनिधित्व करता है |

सन्दर्भ:

१) मैला आँचल,फणीश्वर नाथ रेणु:राजकमल प्रकाशन प्रा.लिमिटेड १-बी नेताजी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली - ११०००२

२) मैला आँचल,फणीश्वर नाथ रेणु:राजकमल प्रकाशन प्रा.लिमिटेड १-बी नेताजी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली - ११०००२ भूमिका से

३) मैला आँचल,फणीश्वर नाथ रेणु:राजकमल प्रकाशन प्रा.लिमिटेड १-बी नेताजी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली - ११०००२ पृष्ठ ७४

४) मैला आँचल,फणीश्वर नाथ रेणु:राजकमल प्रकाशन प्रा.लिमिटेड १-बी नेताजी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली - ११०००२ पृष्ठ ८१

५) मैला आँचल,फणीश्वर नाथ रेणु:राजकमल प्रकाशन प्रा.लिमिटेड १-बी नेताजी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली - ११०००२ पृष्ठ ४६